OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June **ISSN No. : 3108-2661**

इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के युग में विलुप्त होती पारम्परिक कलाएँ

पूजा शर्मा
शोधार्थी
ललित कला विभाग, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ
प्रो० (डॉ.) पूजा गुप्ता
शोध निर्देशक
ललित कला विभागाध्यक्ष,
ललित कला संकाय, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

सारांश
वर्तमान समय में इंटरनेट एवं सोशल मीडिया ने मानव जीवन की जीवनशैली, विचारधारा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। डिजिटल तकनीकों के तीव्र विकास ने जहाँ संचार के साधनों को सरल एवं तीव्र बनाया है, वही पारम्परिक कला एवं संस्कृति के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। भारतीय पारम्परिक कलाएँ, जैसे लोकचित्रण, भित्ति चित्रकला, लोकनृत्य, लोकसंगीत, कठपुतली कला एवं हस्तशिल्प, आधुनिक डिजिटल मनोरंजन एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर अग्रसर हैं। युवा पीढ़ी का झुकाव सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग एवं डिजिटल कंटेंट की ओर अधिक होने से पारम्परिक कला के प्रति रुचि में कमी देखी जा रही है। इसके विपरीत, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया पारम्परिक कला के संरक्षण एवं वैश्विक प्रचार का प्रभावी माध्यम भी बन रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के युग में विलुप्त होती पारम्परिक कलाओं की स्थिति, कारण, चुनौतियाँ तथा संरक्षण की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः इंटरनेट, सोशल मीडिया, पारम्परिक कला, सांस्कृतिक विरासत, डिजिटल युग, लोककला।

प्रस्तावना
वर्तमान युग विज्ञान, तकनीक, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया का युग माना जाता है। आज सम्पूर्ण विश्व डिजिटल माध्यमों के द्वारा एक-दूसरे से जुड़ चुका है। इंटरनेट ने संचार, शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन तथा संस्कृति के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर तथा अन्य डिजिटल माध्यमों ने मानव जीवनशैली एवं सोच को अत्यधिक प्रभावित किया है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी का अधिकांश समय इंटरनेट एवं सोशल मीडिया पर व्यतीत होने लगा है, जिसके कारण उनकी रुचियाँ, विचारधाराएँ तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण निरन्तर परिवर्तित हो रहे हैं। आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण पारम्परिक कला एवं संस्कृति के प्रति लोगों की रुचि धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

भारतीय पारम्परिक कलाएँ देश की सांस्कृतिक पहचान एवं ऐतिहासिक धरोहर का महत्वपूर्ण अंग रही हैं। प्राचीन काल से भारत में चित्रकला, मूर्तिकला, लोक नृत्य, लोक संगीत, हस्तशिल्प, भित्ति चित्रण एवं लोक नाट्य जैसी अनेक कलात्मक परम्पराएँ विकसित हुईं, जिन्होंने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान प्रदान की। राजस्थान की फ्रेस्को चित्रकला, मधुबनी चित्रकला, पिथौरा कला, वारली चित्रकला, पटचित्र, फड़ चित्रण, कठपुतली कला एवं लोक संगीत जैसी अनेक कलाएँ केवल मनोरंजन का माध्यम ही नही थी, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक मान्यताओं एवं ऐतिहासिक परम्पराओं का भी प्रतिनिधित्व करती थी। इन कलाओं के माध्यम से समाज की

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

जीवनशैली, लोक आस्था, रीति-रिवाज एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण होता रहा है। किन्तु वर्तमान डिजिटल युग में पारम्परिक कलाओं के अस्तित्व पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। सोशल मीडिया एवं आधुनिक मनोरंजन साधनों की अधिकता के कारण युवा वर्ग पारम्परिक कला की अपेक्षा आधुनिक एवं डिजिटल मनोरंजन की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है। आज लोग पारम्परिक लोककलाओं के स्थान पर आधुनिक डिजिटल आर्ट, एनीमेशन, वेब सीरीज एवं सोशल मीडिया आधारित मनोरंजन को प्राथमिकता देने लगे हैं। परिणामस्वरूप पारम्परिक कलाकारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है तथा नई पीढ़ी इन कलाओं को सीखने एवं आगे बढ़ाने में रुचि नही दिखा रही है। अनेक लोक कलाकार आजीविका के अभाव में अपने पारम्परिक व्यवसाय को छोड़ने के लिए विवश हो रहे हैं, जिसके कारण कई लोक एवं पारम्परिक कलाएँ धीरे-धीरे विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुकी हैं। इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण एवं बाजारवाद ने भी पारम्परिक कलाओं को प्रभावित किया है। आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति में कला को केवल व्यावसायिक दृष्टिकोण से देखा जाने लगा है।

हस्तनिर्मित पारम्परिक कलाओं की अपेक्षा मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इससे पारम्परिक कलाकारों की पहचान एवं सम्मान में भी कमी आई है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले अनेक कलाकार आधुनिक तकनीकी संसाधनों एवं बाजार तक पहुँच के अभाव में अपनी कला को उचित मंच नही दे पा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण भाग धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। हालाँकि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया केवल नकारात्मक प्रभाव ही नही डालते, बल्कि ये पारम्परिक कलाओं के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के प्रभावी माध्यम भी सिद्ध हो सकते हैं। आज अनेक कलाकार डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी कला को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत कर रहे हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम एवं ऑनलाइन प्रदर्शनियों के माध्यम से पारम्परिक कला को नई पहचान प्राप्त हो रही है। सोशल मीडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं से जोड़ने का प्रयास भी किया जा सकता है। यदि आधुनिक तकनीक का सकारात्मक एवं संतुलित उपयोग किया जाए, तो यह पारम्परिक कलाओं के पुनरुद्धार एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के युग में विलुप्त होती पारम्परिक कलाओं की वर्तमान स्थिति, उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा संरक्षण एवं पुनर्जीवन की संभावनाओं का अध्ययन करना है। यह अध्ययन पारम्परिक कला एवं आधुनिक डिजिटल संस्कृति के मध्य सम्बन्धों को समझने का प्रयास करता है, जिससे भविष्य में भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु प्रभावी उपाय सुझाए जा सकें।

साहित्य की समीक्षा

1. मुक्त अभिव्यक्ति और सोशल मीडिया, शोधार्थी- सुनील कुमार सलैडा, शोध पत्रिका- मीडिया पथ, अंक जनवरी-मार्च , 2016। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अध्ययन कर पाया कि सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति के साथ लोगों को जोड़ने का काम किया है। सोशल मीडिया से आम आदमी का विकास हुआ है।
2. अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच सोशल मीडियाः चुनौतियां एवं संभावनाएं, शोधार्थी- रामशंकर, शोध पत्रिका- शोध अनुसंधान समाचार, अंक दिसंबर, 2013। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अध्ययन कर पाया कि सोशल मीडिया की तरफ लोगों का रुझान तेजी से बढ़ा है। सोशल मीडिया के जरिये नए रोजगार का सृजन हो रहा है, सोशल मीडिया युवाओं को संवाद के साथ ही सृजन का भी मंच उपलब्ध करा रहा है।
3. सोशल नेटवर्किंग साइट- प्रचलित धारणाओं का मूल्यांकन, शोधार्थी- विजय प्रताप, शोध पत्रिका- जन मीडिया, अंक 10, सन् 2013। प्रस्तुत शोध आलेख में शोधार्थी ने अध्ययन कर पाया कि सोशल नेटवर्किंग साइट को वर्तमान में जिस तरह से प्रचारित और विज्ञापित किया गया है, वह सोशल मीडिया के बारे में कई प्रकार के मिथ्या और भ्रम को ढक लेता है। अभिव्यक्ति की आजादी को भी लेकर इस शोध आलेख में चर्चा की गई है।

शोध के उद्देश्य

1. इंटरनेट एवं सोशल मीडिया का पारम्परिक कला पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विलुप्त होती पारम्परिक कलाओं के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

3. सोशल मीडिया द्वारा उत्पन्न संरक्षण की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
4. पारम्परिक कला के संवर्धन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु पुस्तकों, शोध पत्रों, सांस्कृतिक रिपोर्टों एवं इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के आधार पर पारम्परिक कला की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

पारम्परिक कलाओं का स्वरूप

भारत में विभिन्न प्रकार की पारम्परिक कलाएँ प्रचलित रही हैं, जिनमें प्रमुख रूप से लोकचित्रकला, भित्ति चित्रकला, हस्तशिल्प, लोकनृत्य, लोकसंगीत, कठपुतली कला, पारम्परिक वस्त्र एवं कढ़ाई कला। इन कलाओं का संबंध भारतीय समाज की सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं से रहा है।

इंटरनेट एवं सोशल मीडिया का प्रभाव

1. **डिजिटल मनोरंजन की बढ़ती प्रवृत्ति :** युवा वर्ग पारम्परिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अपेक्षा ऑनलाइन मनोरंजन की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है। इससे लोककलाओं की लोकप्रियता में कमी आई है।
2. **पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव :** सोशल मीडिया के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति एवं आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव बढ़ा है, जिसके कारण युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से दूर होती जा रही है।
3. **पारम्परिक कलाकारों की उपेक्षा :** अनेक पारम्परिक कलाकारों को पर्याप्त आर्थिक सहायता एवं मंच नही मिल पाता, जिसके कारण वे अन्य व्यवसायों की ओर रुख कर रहे हैं।
4. **सांस्कृतिक जागरूकता में कमी :** विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में पारम्परिक कला के प्रति पर्याप्त शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव है।

इंटरनेट एवं सोशल मीडिया का पारम्परिक कला पर प्रभाव

क्रम संख्या	प्रभाव	परिणाम
1.	डिजिटल मनोरंजन	लोककलाओं में घटती रुचि
2.	पश्चिमी संस्कृति	सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास
3.	सोशल मीडिया की लत	प्रत्यक्ष सांस्कृतिक सहभागिता में कमी
4.	आर्थिक असुरक्षा	कलाकारों का अन्य क्षेत्रों की ओर रुझान
5.	डिजिटल प्रचार	वैश्विक पहचान एवं संरक्षण के अवसर

संरक्षण की संभावनाएँ

1. **सोशल मीडिया द्वारा प्रचार-प्रसार :** इंस्टाग्राम, यूट्यूब एवं फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म कलाकारों को अपनी कला वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करते हैं।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

2. **डिजिटल आर्काइव एवं वर्चुअल संग्रहालय :** डिजिटल तकनीकों के माध्यम से प्राचीन कलाओं का रिकॉर्ड सुरक्षित रखा जा सकता है। वर्चुअल संग्रहालय लोगों को ऑनलाइन सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करते हैं।
3. **ऑनलाइन शिक्षा एवं प्रशिक्षण :** डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पारम्परिक कला से संबंधित कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिससे नई पीढ़ी इन कलाओं को सीख सकती है।
4. **ई-कॉमर्स एवं आर्थिक अवसर :** ऑनलाइन बाजारों के माध्यम से कलाकार अपने उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेच सकते हैं।

पारम्परिक कला के संरक्षण हेतु सुझाव

1. विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में कला शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
2. पारम्परिक कलाकारों को आर्थिक सहायता एवं सरकारी प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।
3. सोशल मीडिया का उपयोग सांस्कृतिक जागरूकता फैलाने हेतु किया जाए।
4. डिजिटल संग्रहालय एवं सांस्कृतिक आर्काइव विकसित किए जाएँ।
5. युवाओं को लोककला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए।

निष्कर्ष

इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के तीव्र विस्तार ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, जिसमें कला एवं संस्कृति भी प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। आधुनिक तकनीक ने जहाँ संचार एवं ज्ञान के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं, वही दूसरी ओर इसका प्रभाव पारम्परिक कलाओं के अस्तित्व पर भी देखने को मिलता है। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी का झुकाव आधुनिक डिजिटल मनोरंजन एवं पाश्चात्य संस्कृति की ओर अधिक बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण लोक एवं पारम्परिक कलाओं के प्रति उनकी रुचि में निरन्तर कमी आ रही है। परिणामस्वरूप अनेक पारम्परिक कलाएँ आज विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुकी हैं।

भारतीय पारम्परिक कलाएँ केवल मनोरंजन का साधन नही हैं, बल्कि वे देश की सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक मूल्यों एवं ऐतिहासिक परम्पराओं की परिचायक हैं। राजस्थान की फ्रेस्को चित्रकला, मधुबनी कला, फड़ चित्रण, लोक नृत्य, कठपुतली कला तथा लोक संगीत जैसी विधाएँ भारतीय संस्कृति की समृद्धता एवं विविधता को प्रदर्शित करती हैं। किन्तु आधुनिक जीवनशैली, आर्थिक असुरक्षा, सरकारी उपेक्षा एवं बाजारवाद के कारण इन कलाओं का महत्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। पारम्परिक कलाकारों को पर्याप्त आर्थिक सहायता एवं सामाजिक सम्मान न मिलने के कारण नई पीढ़ी इन कलाओं को अपनाने में रुचि नही ले रही है, जिससे इनका भविष्य संकटग्रस्त हो गया है।

इसके अतिरिक्त डिजिटल माध्यमों ने मनोरंजन के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आधुनिक संगीत, फिल्में एवं डिजिटल आर्ट अधिक लोकप्रिय हो गई है। इस कारण पारम्परिक कला एवं लोक संस्कृति के प्रति लोगों का आकर्षण कम हुआ है। यदि यह स्थिति निरन्तर बनी रही, तो आने वाले समय में अनेक पारम्परिक कलाएँ केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित होकर रह जाएँगी।

हालाँकि अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया पारम्परिक कलाओं के संरक्षण एवं पुनर्जीवन के प्रभावी साधन भी बन सकते हैं। आज अनेक कलाकार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी कला को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला रहे हैं। ऑनलाइन प्रदर्शनियाँ, डिजिटल संग्रहालय, यूट्यूब चैनल एवं सोशल मीडिया अभियान पारम्परिक कला के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यदि सरकार, शैक्षणिक संस्थान, सांस्कृतिक संगठन एवं समाज मिलकर योजनाबद्ध प्रयास करें, तो डिजिटल माध्यमों का उपयोग पारम्परिक कलाओं के संरक्षण के लिए प्रभावी रूप से किया जा सकता है।

आवश्यकता यह है कि युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत के महत्व से परिचित कराया जाए तथा शिक्षा के माध्यम से पारम्परिक कलाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए। कलाकारों को आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण एवं डिजिटल मंच उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि वे अपनी कला

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत कर सकें। साथ ही सोशल मीडिया का उपयोग केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर सांस्कृतिक संरक्षण एवं कला संवर्धन के लिए भी किया जाना चाहिए।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इंटरनेट एवं सोशल मीडिया ने पारम्परिक कलाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं, किन्तु यदि आधुनिक तकनीक का सकारात्मक, संतुलित एवं रचनात्मक उपयोग किया जाए, तो यही माध्यम पारम्परिक कलाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं पुनर्जीवन का सशक्त साधन सिद्ध हो सकते हैं। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए समाज, सरकार एवं युवा पीढ़ी को संयुक्त रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे भविष्य में पारम्परिक कला एवं संस्कृति की निरन्तरता बनी रह सके। यदि सोशल मीडिया एवं इंटरनेट का सकारात्मक उपयोग किया जाए, तो पारम्परिक कला को नई पहचान एवं संरक्षण प्राप्त हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. अजय शोधार्थी। "सोशल मीडिया का वैश्विक प्रभाव।" इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एंड साइंस (CASIRJ), खंड 10, अंक 9, वर्ष 2019, पृष्ठ 108।
2. जनसंदेश टाइम्स, अंक 5 जनवरी 2014, (पत्रिका ए टू जेड लाइव) शीर्षक- आम आदमी की नई ताकत बना सोशल मीडिया, लेखक रवीन्द्र प्रताप।
3. शोध अनुसंधान समाचार, अंक दिसंबर 2013, शोध आलेख- अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच सोशल मीडियाः चुनौतियां एवं संभावनाएं, शोधार्थी- रामशंकर।
4. जन मीडिया, अंक 10, सन् 2013 शोध आलेख- सोशल नेटवर्किंग साइटः प्रचलित धारणाओं का मूल्यांकन, शोधार्थी- विजय प्रताप।
5. योजना, अंक मई, 2013 शोध आलेख- सामाजिक सक्रियता का एक नया चेहरा फेसबुक, लेखक नंदिनी सी।
6. मीडिया पथ, अंक जनवरी- मार्च 2016, शोध आलेख- मुक्त अभिव्यक्ति और सोशल मीडिया, शोधार्थी सुनील कुमार सलैडा।
7. योजना, अंक मई, 2013 शोध आलेख- बहुपयोगी संवाद माध्यम है सोशल मीडिया, लेखक अजय ब्रम्हात्मज।
8. गुप्ता, विनीता. (2015). संचार और मीडिया शोधः नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
9. https://share.google/6uywH4P1cOOWtZr8B
10. https://share.google/Gp9jlTryGEVKDG0cw
11. https://share.google/ZNS2GhKLbj3TJeHSR